आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853116
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16 विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में, ________________

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 15 रोहतक, 14 सितम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

राष्ट्र की उन्नति के लिए गृहस्थ को संवारें

❑ गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

संसार की समस्त संस्थाओं में गृहस्थ संस्था सबसे सर्वोत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण संस्था है। भूलोक की लगभग 99 प्रतिशत आबादी इस संस्था की सदस्य है। सच्चे और चरित्रवान् व्यक्तियों के अभाव का रोना आज सर्वत्र रोया जा रहा है। विद्यार्थियों के बिगाड़ पर भी हर ओर विपुल प्रलाप किया जा रहा है। संन्यासी, गुरु-शिष्य, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, राजा-प्रजा, नेता, मंत्री इन सब की भ्रष्टता पर बहुत आंसू बहाये जा रहे हैं। यह समझ लेना चाहिए कि गृहसंस्थाओं से ही सब संस्थाओं में सदस्य जाते हैं। राजा, मंत्री, कर्मचारी, नेता, अध्यापक, उपदेशक, लेखक, श्रमिक, सेवक, विद्यार्थी सब गृहस्थ के घर से ही आते हैं।

गृहस्थ जीवन नष्ट हो रहा है। गृह भ्रष्ट हो गये हैं। भ्रष्ट गृहों में भ्रष्ट प्रजा का निर्माण हो रहा है। भ्रष्ट गृहों की भ्रष्ट प्रजा ने आश्रम क्षेत्र, शासन क्षेत्र, विद्या क्षेत्र, धर्म क्षेत्र, सेवा क्षेत्र, समस्त क्षेत्रों को भ्रष्ट कर दिया है। गृहस्थ संस्था के भ्रष्ट हो जाने के कारण ही सब संस्थाएं भ्रष्ट हो गई हैं, समाज भवन भ्रष्ट हो गये हैं, मंदिर भ्रष्ट हो गए, मस्जिद, चर्च व स्कूल-कॉलेज भ्रष्ट हो गए हैं। शासन भ्रष्ट हो गया है, शासक भ्रष्ट हो गये हैं, राज कर्मचारी और नेता भ्रष्ट हो गए हैं। पूरी जनता में भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमाता जा रहा है। समाज में हर तरफ हिंसा व लूट, बलात्कार व अपहरण इत्यादि का ताण्डव नृत्य हो रहा है। स्त्रियां खुद को अपने घर में भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं। चार-पांच साल की मासूम तो क्या यहां दुधमुही बच्चियां भी आज सुरक्षित नहीं हैं। यहाँ तक कि उनके साथ बलात्कार के पश्चात् सबूत मिटाने हेतु उनकी निर्मम हत्या भी कर दी जाती है, चारों ओर इस प्रकार का दूषित माहौल हो गया है। हर तरफ मानो इंसान नहीं दुर्व्यसनी राक्षसों ने डेरा डाल रखा हो। इसके अलावा हर वस्तु में मिलावट का धंधा जोरों पर है, खाद्यपदार्थ भी नकली और उन्हें खाकर बीमार होने पर हमें स्वस्थ करेंगी यह सोचकर जो दवाइयां खाई जा रही हैं वे भी नकली। पूरा समाज ही धोखाधड़ी के गहरे दलदल में धंस चुका है। समाज हमारे घर-परिवारों से मिलकर बनता है। यही बात चिंतनीय एवं विचारणीय है हम सब कहते हैं कि समाज बिगड़ रहा है, समाज में रहने वाली पुरातन पीढ़ी के साथ-साथ नव-पीढ़ी भी बिगड़ती जा रही है, लेकिन यदि एक कम्पीटिशन एक ही मोहल्ले में रखा जाए जिनकी मानसिकता इस प्रकार की है कि हमारे मुहल्ले के बच्चे बिगड़ रहे हैं तो प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को कम्पीटिशन में रखे गए अच्छे और बिगड़े हुए बच्चों की कतार में से अच्छे, बच्चों की कतार में ही रखना पसन्द करेंगे, क्योंकि प्रत्येक गृहस्थी या गृहस्थ का मुखिया या नव-पीढ़ी चाहे लड़का हो या लड़की ये तो कहते हैं कि हमारे आस-पास माहौल बिगड़ गया है लेकिन कोई भी स्वयं को इसका जिम्मेदार नहीं मानता स्वयं को अच्छा समझने की भूल करता है। यदि सभी अच्छे हैं तो बताओ माहौल कौन बिगाड़ रहा है। विचार करो, ये माहौल खराब करने वाले जैसा कि मैंने पहले बताया है, कहीं और से नहीं हमारे गृहस्थ के घर से आते हैं इसलिए सारे बिगाड़ की जड़ को ही पकड़ना होगा क्योंकि जड़ को सींचने से वृक्ष फलता-फूलता है। सर्वप्रथम हमें समाजरूपी, वृक्ष की जड़ को सींचना होगा। क्योंकि गृहस्थाश्रम को निर्वाह करने वाले गृहस्थी के ऊपर ही परिवार के सभी दायित्व होते हैं। शिवाजी, महाराणा प्रताप, बन्दा वैरागी जैसी शौर्य वीरता की गाथाएं हमें बताती हैं कि श्रेष्ठ सन्तानों को उत्पन्न कर हम इतिहास के विकृत धारा के प्रभाव को समाप्त कर सुकृत धारा का प्रवाह बना सकते हैं। गृहस्थाश्रम एक संयुक्त शब्द है— गृह+स्थ+आ+श्रम। गृह का अर्थ है 'घर', स्थ का अर्थ है 'स्थान', आ का अर्थ है 'चारों तरफ से', श्रम का अर्थ है 'परिश्रम'। गृहस्थाश्रम या पारिवारिक दाम्पत्य जीवन जब संतुलित और सशक्त होता है तो लोक-परलोक के सम्पूर्ण वैभव, सकल ऐश्वर्य, समस्त विभूतियाँ, सुख आनन्द और सम्मान प्राप्त होते हैं।

अतः सर्वप्रथम गृहस्थ को संस्कारवान् बनाना होगा। सुसंस्कृत घरों से ही संस्कारवान् आचार्य, अध्यापक मिलेंगे। सुसंस्कृत घरों के संस्कारवान् बालक विद्यालयों में जाकर दिव्यजन बनकर निकलेंगे और पूर्वकाल में निकले भी, इसके उदाहरण इतिहास टटोलने पर सैकड़ों मिल जायेंगे। हमारे इतिहास में उत्तम संतति का निर्माण करने वाले श्रेष्ठ गृहस्थी का उदाहरण तो योगेश्वर श्रीकृष्ण और माता रुक्मिणी का है। कहा जाता है दोनों ने श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति के लिए 12 वर्ष तक एकान्त स्थान पर ब्रह्मचर्य का पालन कर तपश्चर्या की, तब प्रद्युम्न जैसी तेजस्वी और महाबली उत्तम संतान उन्हें प्राप्त हुई। इसी प्रकार वीर धनुर्धारी अर्जुन की दिव्य संतान वीर अभिमन्यु की शिक्षा मां के गर्भ से ही प्रारम्भ हो गई थी। त्रेता युग में महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया और कठोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे वीर सुयोग्य सन्तानों का जन्म हुआ।

हम अपने परम पावन और प्रेरक इतिहास में वर्णित अनेक श्रेष्ठ परिवारों की विशेषताओं को ग्रहण कर आज की अनेक पारिवारिक समस्याओं को समाप्त कर सकते हैं। ऐसा कदापि न सोचें कि केवल उपदेशों और विद्यालयों में समस्या का समाधान हो सकेगा। जब तक प्रत्येक घर के चौबीसों घण्टों के वातावरण का शुद्ध व संस्कारित नहीं किया जाएगा तब तक समाज से बुराई भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो सकेगा। प्रत्येक गृहस्थी को यह समझ लेना चाहिए कि अच्छे जनों का निर्माण, राष्ट्र और संसार का निर्माण घरों से ही होगा। इसलिए अच्छे गृहस्थ कैसे बनें इस पर विचार करना होगा, उस पर आचरण करना होगा। व्यक्ति की उन्नति और विकास के लिए परिवार एक सामाजिक संस्था है। व्यक्ति का जीवन परिवार से बनता है। व्यक्ति की उन्नति के लिए उसके परिवार का वातावरण संस्कारित होना आवश्यक है। पारिवारिक वातावरण अच्छा होने से और कुटुंब के संस्कारित होने से

क्रमशः पृष्ठ 2 पर...

राष्ट्र की उन्नति के लिए गृहस्थ... प्रथम पृष्ठ का शेष....

गृहस्थ रूपी यह संस्था राष्ट्रीय उन्नति में सहायक होती है। इस सामाजिक संस्था का योग्य बनना हमारे लिए आवश्यक है क्योंकि इस संस्था से परिवार के सदस्यों का भविष्य जुड़ा होता है। परिवारों के स्वस्थ व निरोग होने से उसका असर अन्ततः समाज पर पड़ता है और समाज का राष्ट्र पर। सुखी गृहस्थी के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना करना भूल होगी। **हमारे आर्ष साहित्य गृहस्थ को चारों आश्रमों का आधार बताते हैं।** जिस प्रकार सभी नदियां चलकर समुद्र में आश्रय पाती हैं उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर आश्रित रहते हैं। अगर गृहस्थाश्रम बिगड़ गया तो बाकी के सारे आश्रम भी बिगड़ जायेंगे। वेदों में निरन्तर सुखी गृहस्थ के लिए उपदेश दिया है। जब इस देश में वैदिक संस्कृति थी तब तक हमारे परिवार सुखी और समृद्ध थे। लेकिन आज के इस आधुनिक युग में हमारे परिवारों में अयोग्यता और भौतिक सुख-साधनों की चाह होने से हम लक्ष्य से दूर नहीं हो रहे हैं। वैदिक संस्कृति से दूर होने के कारण हमारे परिवारों में विपरीत मान्यताएं, कुसंस्कार और कलह आ रहे हैं। इसलिए आज के अधिकतर परिवार दु:खी, कष्ट से पीड़ित दिखाई देते हैं। परिवार में संगठन और एकता का अभाव होने से हमारे परिवार टूट रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव हमारे समाज पर पड़ रहा है। समाज स्वस्थ और संगठित न होने का कारण हमारे उजड़े परिवार हैं। जब परिवार हमें योग्य, नागरिक देगा तभी तो देश उन्नति की राह पर बढ़ेगा। प्रत्येक परिवार का यह लक्ष्य होना चाहिए कि हम देश को योग्य नागरिक देंगे। अच्छे नागरिकों के द्वारा ही देश की प्रतिष्ठा विश्व में फैलती है। अच्छे नागरिकों का निर्माण परिवार और समाज की जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को झुठलाया नहीं जा सकता। सुखी गृहस्थ के निर्माण के लिए कुछ बातों की आवश्यकता होती है, इसकी चर्चा हम करेंगे जिन पर अमल करने से हमारे परिवार सुखी व समृद्ध होंगे और राष्ट्र की उन्नति में सहायक होंगे।

1. पति-पत्नी में विचारों की समानता-पति-पत्नी गृहस्थाश्रम के मुख्य घटक हैं। इनका प्रभाव ही पूरे परिवार पर पड़ता है। अगर पति-पत्नी का परस्पर व्यवहार स्नेहपूर्ण होता है तो घर में आनन्द का सागर उमड़ता है। पति-पत्नी में प्रेम का अटूट बन्धन होने के लिए दोनों के विचारों की समानता आवश्यक होती है। जहाँ विचारों में समानता होती है, वहाँ कलह और दु:ख नहीं आ सकते।

2. मधुर वाणी-सुखी गृहस्थी के लिए मधुर वाणी का बड़ा महत्त्व है। जिस घर में मीठी वाणी का प्रयोग होता है उस घर के सभी सदस्य परस्पर प्रसन्न और सन्तुष्ट रहते हैं। परिवार के सभी सदस्य को आपस में मीठी वाणी के द्वारा बातचीत करनी चाहिए। कटु वाणी का प्रयोग करने से एक-दूसरे के हृदय आहत होते हैं और प्रेम बन्धन कमजोर होता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को बोलते समय विचार करके ही बोलना चाहिए, क्योंकि एक बार बोलने के बाद पश्चात्ताप करने से कुछ प्राप्त नहीं होता। शरीर का घाव भर जाता है लेकिन वाणी का घाव भर नहीं सकता। इसलिए मीठी वाणी का प्रयोग करके परिवार के सुख को बढ़ाया जा सकता है।

3. परस्पर समर्पण भाव-'मैं' और 'हम' जीवन के कोई साधारण शब्द नहीं हैं। इन दो शब्दों पर ही गृहस्थी की सारी सुख-शान्ति टिकी होती है। 'मैं' या 'मेरा' एक ऐसी विचारधारा की ओर संकेत करते हैं, जहां आप, सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। आपका व्यक्तित्व, सिर्फ अपने तक ही सिमटा होता है। आपका हर कदम, आपको अपने हित और अपने ही स्वार्थ की ओर ले जाता है। लेकिन, सब को साथ लेकर आगे बढ़ने का नाम है 'हम'। घरेलू जीवन का, पति-पत्नी के बीच रिश्तों का और सच्चे सुख का नाम है 'हम'। मैं नहीं, मेरा नहीं, बल्कि 'हमारा'। 'हम' और 'हमारा' सिर्फ शब्द न होकर एक एहसास है सबके करीब होने का। एक निश्चय है सबकी उन्नति और संरक्षण का। विवाह होने से पूर्व जब सगाई होती है, तभी हमारा मन अपने स्वयं के बारे में न सोचकर अपने साथ जुड़ने वाले जीवनसाथी के बारे में सोचना शुरू कर देता है अर्थात् आप कुछ भी खाने से पहले उस व्यक्ति के बारे में सोचते हैं कि पता नहीं उन्होंने खाया होगा या नहीं और गृहस्थी के बाद जब बच्चे होते हैं और अगर आप उस समय बाजार में गए हों तो अवश्य ही मन में एक बार विचार आएगा कि बच्चों के लिए कुछ ले लूँ या बच्चों को कुछ चाहिए तो नहीं। ढाई अक्षरों से अगर 'प्रेम' का पाठ पढ़ाया जा सकता है तो दो अक्षरों वाले 'हम' से 'एकता' और 'विश्वास' का। जिन्दगी के ऐसे ही पाठों में छिपा होता है-गृहस्थी की सफलता का मूलमन्त्र।

4. सुप्रजा-सुसंतान के द्वारा ही घर का यश बढ़ता है। सन्तान का अच्छा निकलना माता-पिता के लिए गौरव का विषय होता है। संतान का उत्तम होना माता-पिता के लिए जहाँ प्रमुख सुखों में माना जाता है, वहीं दूसरी ओर कुसंतान द्वारा वह अपमानित होते हैं। उनके परिवार की सुख-शान्ति कुसंतान से नष्ट हो जाती है। संतान का बुरा निकलना मन को बड़ी पीड़ा देने वाला होता है साथ में राष्ट्र के लिए भी बड़ा दुखदायी होता है। इसलिए वेद के इस उपदेश को समझें-**'मनुर्भव जन्या: दैव्यं जनम्'**। अर्थात् मनुष्य बनो और दिव्य गुण (राष्ट्र के हितकारी) संतान उत्पन्न करो। अत: प्रत्येक गृहस्थ का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह अपनी संतान को सुसंस्कारित करने का भरसक प्रयत्न करे।

5. धर्म-परायणता-धर्म-परायणता सुखी गृहस्थ का मुख्य तत्त्व है। धर्म के आचरण बिना सुखी गृहस्थ बनना संभव नहीं हो सकता। इसलिए घर के प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का आचरण प्रयत्न पूर्वक करना होगा। मनु महाराज धर्म के दस लक्षण (धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी: (बुद्धि), विद्या, सत्य, अक्रोध) बताए हैं। इनका पालन करना ही सच्ची धार्मिकता है न कि कोई पूजा-पाठ या कर्मकाण्ड। जिसका व्यवहार और आचरण आदर्श है, वही सच्चे अर्थों में धार्मिक कहा जाना चाहिए। इस प्रकार का धार्मिक व्यक्ति अपने परिवार ही नहीं बल्कि समाज एवं राष्ट्र के लिए आदर्श साबित होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति स्वयं ही बुरी लत में फँसा हो, अवगुणों की कीचड़ में धँसा हो, वह अपने परिवार तो क्या समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में घातक सिद्ध हो सकता है। अत: अच्छे गृहस्थी को राष्ट्रोन्नति में सहायक होने हेतु धार्मिक होना अनिवार्य है। इसीलिए वैदिक विचारधारा के अनुसार सभी को नित्यप्रति प्रात:-सायं बैठकर अपने मनरूपी मन्दिर में विराजमान ईश्वरीय शक्ति का सान्निध्य, अर्थात् सन्ध्या, हवन और ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। ईश्वर की भक्ति करने से कुसंस्कार दूर होकर मन निर्मल होता है। घर में बड़े व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह छोटे बच्चों को ईश्वर उपासना के लिए प्रेरित करे। उपदेश करके उनके मन में रुचि बढ़ाये।

6. आर्थिक सम्पन्नता-आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना सुखी गृहस्थी के लिए महत्त्वपूर्ण है। आज का युग अर्थयुग है, इसलिए परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए हमें धन की आवश्यकता होती है। जहाँ आर्थिक समृद्धि है वहाँ सुख का निवास होता है। घर में किसी वस्तु का अभाव नहीं होना चाहिए। सभी सदस्यों की उन्नति और विकास के लिए आवश्यक साधन-सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। प्रत्येक सदस्य को उद्यम व परिश्रम द्वारा अपना योगदान परिवार की उन्नति के लिए देना चाहिए। तभी तो मेहनत और पुरुषार्थ द्वारा अच्छे आय के स्रोत से धन कमाना चाहिए। आवश्यकता से अधिक धन की इच्छा व्यक्ति के सुख और शान्ति को नष्ट करती है। इसलिए व्यक्ति को अपने पुरुषार्थ और मेहनत से जो प्राप्त होता है उस पर सतुष्ट होना चाहिए।

7. संयमी जीवन-गृहस्थाश्रम का पालन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को संयमी जीवन जीना चाहिए चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। योगेश्वर श्रीकृष्ण की भांति आदर्श गृहस्थ का अनुसरण करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। जिस प्रकार उन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय संयम, ब्रह्म में विचरण) का पालन कर जीवन यापन किया। उसी प्रकार सभी को समाज व राष्ट्र के समक्ष गदगृहस्थ का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए जिससे लोग आपका अनुसरण करें।

अन्ततः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे पर सन्तुष्ट होकर प्रेमपूर्वक संवाद स्थापित कर आनन्दपूर्वक विचरते हैं, वह घर सचमुच धरती का स्वर्ग है। जिस राष्ट्र की माटी से हमारा शरीर बना है, जिसका अन्न खाकर हम पले-बड़े हुए हैं उसकी उन्नति के लिए, उसके गौरव के लिए हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम अपने गृहस्थ आश्रम को संवारें तभी राष्ट्र उन्नति कर सकता है। ऐसा तभी संभव है जब हम वैदिक विचारधारा अपने जीवन में अपनायेंगे और तदनुकूल आचरण करेंगे।

संपर्क-डीएनवाई व मॉस्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर, चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61
मो० 9871644195

ओ३म्

गायत्री-मन्त्र

-: वेद-मन्त्र :-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ—ओ३म् (रक्षक) **भूः** (प्राणों से प्यारा) **भुवः** (दुःखनाशक) **स्वः** (सुखस्वरूप) **तत्** (उस) **सवितुः** (उत्पन्न करने वाले का) **वरेण्यम्** (वरण करने योग्य) **भर्गः** (पापनाशक) **देवस्य** (प्रकाशस्वरूप का) **धीमहि** (हम ध्यान करते हैं) **धियः** (बुद्धियों को) **यः** (जो) **नः** (हमारी) **प्रचोदयात्** (प्रेरित करे)।

गायत्री मन्त्र का शब्दार्थ बार-बार इसलिये लिखा जाता है कि यदि मनुष्य कम से कम 21 बार गायत्री मन्त्रों का जप प्रतिदिन अर्थ का विचार करते हुये करता रहे तो उसे मन को रोकने में तथा बुद्धि बढ़ाने में पर्याप्त लाभ होता है। आज ही आरम्भ कर दें तथा जिसे लाभ हो, वह सभा को सूचित करे। इससे दूसरों को भी प्रेरणा मिलेगी।

व्याख्या—भुवः तक की व्याख्या पिछले अंक में की जा चुकी है। **स्वः** पर विचार किया जाता है। **स्वः** का अर्थ सुखदायक है। मनुष्य ईश्वर को भूलकर खुशामदी मित्रमण्डली में सुख पाना चाहता है। एक व्यक्ति सदैव अपने खुशामदी मित्र के साथ रहता था। उसके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता था। दूसरे के साथ अधिकांश में मिलता रहता था। तीसरे के पास कभी मास में एक या दो बार ही मिल पाता था। एक बार उस पर किसी मामला में मुकदमा हो गया। गवाह की आवश्यकता थी। गवाह के बिना उसकी कैद होनी थी। पहले दोनों ही व्यक्ति गवाही के लिये निषेध कर गये। सर्वप्रथम तो न्यायालय तक भी नहीं गया। दूसरा न्यायालय तक गया परन्तु गवाही से मना कर दिया। तीसरे कहते ही साथ हो लिया तथा उसने गवाही भी दी। तीसरा ईश्वर उपासक था। ईश्वर तथा ईश्वर उपासक ही अन्तिम समय तक साथ देता है। अतः सर्वदा सुखदाता ओ३म् ही है।

तत् सवितुः वह प्रभु ही गर्भ में भी पोषण करके उत्पन्न करने वाला है। एक व्यक्ति ने वैदिक उपदेशक से कहा कि ईश्वर पैदा करने वाला कैसे कहा जाता है। मुझे तो मेरे माता-पिता ने पैदा किया है। पैदा करने में ईश्वर का क्या लेना-देना है अर्थात् क्या कार्य है? दैवयोग से शङ्काकर्त्ता कुरूप काले रंग का था। वह उपदेशक हंसकर कहने लगा—क्या आप के माता-पिता आपको जैसे आप हो, वैसा बनाना चाहते थे? सारी कारीगरी प्रभु की है। अतः उसी का गुणगान करना चाहिये। कवि के वचन पढ़ें—

बच्चा हो जब गर्भ में माता से जाकर पूछो।
सच्ची बता दे माता तू क्या बना रही है?
दुनिया को देख दुनिया.......
माता-पिता ही दोनों हैरत में आ गये हैं।
दुनिया को देख दुनिया हैरत में आ गई है।

भर्गः अर्थात् पापनाशक प्रभु को इसलिये कहा गया है कि वह दयालु देव जीव को शुद्ध व पवित्र बनाता है। जब जीव-आत्मा पाप से किसी प्रकार नहीं बच पाता, मन अत्यधिक चंचल हो जाता है, तो प्रभु उसे वृक्ष बना देता है। जीव बेहोश अवस्था में रहता है। पागल मनुष्य को भी चिकित्सक बेहोश करके उसकी चिर-अवस्था करता है। परमात्मा जीवात्मा को नाना योनियों में शुद्ध करता हुआ मोक्ष तक पहुंचाता है। **देवस्य** अर्थात् प्रकाशकों का भी प्रकाश है। दीपक, मोमबत्ती, चकाचौंध करने वाली विद्युत् तथा अन्त में सूर्य के प्रकाश को देखकर मनुष्य आश्चर्य में पड़ जाता है। ईश्वर की गोद में तो अनेक सूर्य हैं। अतः उसी का ही गुणगान करते रहना चाहिये। **धीमहि** अर्थात् ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार अपने गुण, कर्म व स्वभाव बनाने में हमारा लाभ है। प्रकृति की गोद में तो मूढ़ता ही प्राप्त होगी। एक सेठ भवन बना रहा था। शक्ति से अधिक भवन का निर्माण करने के कारण धन समाप्त हो गया। एक दिन प्रातःकाल एक गरीब की झोपड़ी के सामने उस सेठ को गिड़गिड़ाते हुये रुपये मांगते देखा। लोगों ने तुरन्त समझ लिया कि सेठ जी पागल हो गये हैं। मकान की पूर्ति हेतु ईश्वर का ही ध्यान करना पड़ेगा। ईश्वर ही सच्चिदानन्द है।

पढ़िये—

ईश्वर के आनन्द में गोता लगाया कर लगाया कर।
छोड़कर प्रभु का पल्ला नरक में दुःख न पाया कर॥

—आचार्य बलदेव

स्वास्थ्य चर्चा....

रोगों से बचने के उपाय

❑ देवीसिंह आयु० चिकित्सक, म०नं० 218, सैक्टर-14, रोहतक

चाहे हम किसी भी कारण से गलतियां करते हैं जैसे—मजबूरी में अज्ञानता से या जानबूझकर भी आज की चकाचौंध में हम प्राकृतिक नियमों, संयम, ब्रह्मचर्य आदि के महत्त्व को भूल गये हैं। असली नैतिक गुणों से हम दूर होते जा रहे हैं। अपनी उत्तम संस्कृति छोड़ दूसरों की विवेकहीन अंधी नकल से अनेक परेशानियों में फंसते जा रहे हैं। सब दिखावे स्वार्थ व अर्थ पर केन्द्रित हो गया है। जब तक सही आहार-व्यवहार और उत्तम निःस्वार्थ विचारों के द्वारा जनता का जागरण ना होगा तब तक हर प्रकार के संकट आते रहेंगे।

40-50 साल पहले हमारी माता-बहनें घर-घर में हर प्रकार के प्राथमिक उपचार जानती थीं। जैसे-गुम चोट में ठण्डी पट्टी-हल्दी-दूध से पिलाना, पेट दर्द में भुनी हींग-हरड़ देना आदि। रोगों से बचना अपने बस का काम है। बिना जहर का अन्न-दूध-फल-तरकारी खाना चाहते हो तो किसानों का ईमानदारी से सहयोग करो। राष्ट्ररक्षा हेतु सैनिकों का सम्मान करो। सन् 1957 से कुछ अनुभव कर पाया। सेहत ठीक रखने के लिए निम्न संकेत है—प्रातः वक्त से उठने पर हवा शुद्ध मिलेगी, जल पीकर घूमना या जरूरी काम करें। प्राणायाम या लम्बे गहरे श्वास ताकतानुसार लें, योगासन या व्यायाम भी शक्ति अनुसार ही करें। थकावट में कतई न करें, झटके से भी नहीं।

भूख-प्यास-मल-मूत्रादि वेगों को ना रोकें, चाहे यात्रा में हों, सार्वजनिक वाहन को भी रुकवा सकते हैं। बिना भूख नहीं खाना, जो खाना बिना घुंटे चबा-चबाकर खाना बीच-बीच में आवश्यकतानुसार थोड़ा-सा जल पीने से शीघ्र प्यास नहीं लगती पत्रक लेखक विशाल मरुस्थल व 5 वर्ष बर्फीले स्थानों पर रहा। जो डॉक्टर कहते हैं कि सूखे खाने-सूखी सब्जी के साथ भी पानी नहीं पीना तथा भोजन के डेढ़ घण्टे तक नहीं पीना इनको शायद किसान-कामगार-सैनिक-खिलाड़ी आदि के काम की जानकारी होनी चाहिए। सलाद-छाछ आदि भोजन के बाद लें। खुले में रक्खी दाल तीन घण्टे बाद न लें। भूख से कम खायें। प्यास कभी न रोकें। क्षार प्रधान खाना लें, समय पर विश्राम व गहरी नींद लें, खाने का समय निश्चित हो। शरीर सफाई के मुख्य अंग—(1) फेफड़े, (2) मल-मार्ग, (3) गुर्दे, (4) चर्म हैं।

शरीर को शुद्ध पोषण न मिले तो हमारे अंग कमजोर होने लगते हैं। तब वे गन्दे पदार्थों को पूर्णतया बाहर नहीं निकाल पाते। कब्ज होकर अनेक रोग होते हैं। गन्दगी से रोगाणु बढ़ते हैं।

हमारी रोग प्रतिकार शक्ति मजबूत हो तो कीटाणु रोग नहीं पैदा कर सकते। रक्तक्षारीय रहना चाहिये। CELLS-कोशिकाएं-तन्तु प्रतिक्षण टूटते हैं, नष्ट होते हैं। नष्ट हुए शरीर से निकलने चाहियें, नये बनने चाहियें। विश्राम-गाढ़ी नींद में नई कोशिकायें बनती हैं।

शरीर में रिजर्व शक्ति रहती है जो उपवास आदि संयम के काम आती है। व्रत से पाचनतन्त्र की ताकत बढ़ती है तथा कई रोग ठीक होने में सहायक हैं। चना-बाजरा-आलू आदि के साथ चिकनाई लें। मीठे हेतु गुड़-शीरा-किशमिश-खजूर आदि उत्तम हैं। चाय-चीनी मीठे जहर हैं। चाय के जहर-टेनिन-कैफिन-निकोटीन-थीन-पेपीन-साइनोजोन-स्ट्रिकनायल-साइनाइड-एरोमोलिक आदि भयंकर विष हैं।

हाजमें की कमी से पित्त-कफ-आँव बनते हैं। अधिक नमक, चिकनाई से दिल-गुर्दे-जिगर रोगी होते हैं। अधिक अचार-खटाई से गला खराब होकर कई रोग होते हैं। रासायनिक औषधियाँ सावधानी से प्रयोग करें, इनसे रोगरोधक शक्ति घटती है। सारा जीवन दवा लेने से छुटकरा मिल जाता है। परहेज व बचाव से सेहत पूरा जीवन ठीक रहती है। गारंटी से बचें-झाड़ा-मंत्र-जादू-टोने-डोरी-ताबीज-सिद्ध-यन्त्र और अन्ध श्रद्धा से बचें। जड़पूजा से भी बचें। कुत्ते, सांप काटे का झाड़ा धोखा है। आपकी रसोई में कई दवाइयां हैं, उपयोग कर लाभ उठावें।

स्थायी पता—बुआना लाखू, तह० इसराना (पानीपत) मो० 9996316318

देश के कर्णधार हमारे शिक्षक व शिष्य कैसे हों?

शिक्षा देने व विद्यार्थियों को शिक्षित करने से अध्यापक को शिक्षक व शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शिष्य कहा जाता है। आजकल हमारे शिक्षक बच्चों को अक्षर व संख्याओं का ज्ञान कराकर उन्हें मुख्यतः भाषा व लिपि से परिचित कराने के साथ गणना करना सिखाते हैं। आयु वृद्धि के साथ साथ बच्चा भाषा, कविता, गणित सहित विज्ञान व कला आदि विषयों को भी अपने शिक्षकों से पढ़ता है और आगे चलकर वह पुस्तकें पढ़कर व शिक्षकों के मार्गदर्शन से चिकित्सक, इंजीनियर, कम्प्यूटर सेवी, अध्यापक, व्यापारी व उद्योगपति आदि बन जाता है। हमारी वर्तमान जो शिक्षा प्रणाली है, उसमें बहुत कम लोग ही सत्य व चारित्रिक नियमों का पालन करने वाले बनते हैं। आजकल देखा जाता है कि बात बात पर झूठ बोलना एक आम बात हो गई है। यदि यह कार्य अशिक्षित करते तो समझ में आता, परन्तु बड़ी-बड़ी उपाधि के धारणकर्ता व उच्च पदों पर प्रतिष्ठित लोग प्रायः असत्य बोलते हैं व अपने अपने कार्यों में मिथ्याचार व भ्रष्टाचार आदि में लिप्त पाये जाते हैं। इस असत्य व्यवहार व मिथ्याचार का कारण हमें एक ओर शिक्षा प्रणाली व दूसरी ओर शिक्षकों का निजी आचारण, जीवन व चरित्र अनुभव होता है। जैसा शिक्षक होगा वैसा ही कुछ व अधिक प्रायः शिष्य बनता है।

हमारा देश ज्ञान की दृष्टि से अन्य देशों से अधिक भाग्यशाली रहा है। प्राचीन काल में हमारे देश के लोगों के जीवन व चरित्र आदर्श व महान होते थे जिसका प्रमुख कारण वेदों का ज्ञान, विद्यार्थियों द्वारा उसका अध्ययन व आचार्यों के उच्च जीवन एवं चरित्र होते थे। आज एक अरब से अधिक जनसंख्या हो जाने पर भी किसी के बारे में यह कहना कठिन है कि अमुक व्यक्ति सत्य का ही व्यवहार करता है एवं असत्य का किंचित व्यवहार नहीं करता और इसका चरित्र आदर्श व बेदाग है। इसका कारण हमें शिक्षा में वैदिक मूल्यों की उपेक्षा व पाश्चात्य मूल्यों की बहुलता सहित हमारे शिक्षकों का ज्ञान व अज्ञानवश पाश्चात्य मूल्यों के प्रति प्रेम अनुभव होता है। आईये, वैदिक काल में अध्यापक और अध्यापिकायें कैसे

❑ मनमोहन कुमार आर्य

होते थे व होने चाहिये, यह वेदों के मर्मज्ञ, आदर्श जीवन व चरित्र के धनी महर्षि दयानन्द के शब्दों में जानते हैं।

महाभारतान्तर्गत उद्योगपर्व विदुर प्रजागर के अध्याय 33 के 6 श्लोकों को प्रस्तुत कर वह सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं कि जिस को आत्मज्ञान सम्यक् हो अर्थात् जो निकम्मा आलसी कभी न रहे, सुख दुःख, हानि लाभ, मान-अपमान, निन्दा स्तुति में हर्ष-शोक कभी न करे, धर्म ही में नित्य निश्चित रहे, जिस के मन को उत्तम-उत्तम पदार्थ अर्थात् विषय सम्बन्धी वस्तुयें आकर्षित न कर सकें, वही पण्डित वा

शिक्षक कहाता है। सदा धर्मयुक्त कर्मों का सेवन, अधर्मयुक्त कामों का त्याग, ईश्वर, वेद, सत्याचार की निन्दा न करनेहारा, ईश्वर आदि में अत्यन्त श्रद्धालु हो, वही पण्डित वा अध्यापक-अध्यापिका का कर्तव्य-अकर्तव्य अथवा कर्म है। जो कठिन विषय को भी शीघ्र जान सके, बहुत कालपर्यन्त शास्त्रों को पढ़े सुने और विचारे, जो कुछ जाने उस को परोपकार में प्रयुक्त करे, अपने स्वार्थ के लिये कोई काम न करे, बिना पूछे वा बिना योग्य समय जाने दूसरे के अर्थ में सम्मति न दे, ऐसा व्यक्ति ही प्रथम प्रज्ञान पण्डित, शिक्षक, अध्यापक व अध्यापिका को होना चाहिये। अध्यापक व अध्यापिका ऐसे हों कि जो प्राप्ति के अयोग्य की इच्छा कभी न करे, नष्ट हुए पदार्थ पर शोक न करे, आपत्काल में मोह को न प्राप्त हों अर्थात् व्याकुल न हों। यह गुण बुद्धिमान पण्डित के हैं और ऐसे ही अध्यापक व अध्यापिकायें होंवे जिसकी वाणी सब विद्याओं और प्रश्नोत्तरों के करने में अतिनिपुण व विचित्र, शास्त्रों के प्रकरणों का वक्ता, यथायोग्य तर्क और स्मृतिमान्, ग्रन्थों के यथार्थ अर्थ का शीघ्र वक्ता हो वही पण्डित वा अध्यापक कहलाता है। जिस व्यक्ति की प्रज्ञा सुने हुए सत्य अर्थ के अनुकूल और जिसका श्रवण बुद्धि के अनुसार हो, जो कभी आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धार्मिक पुरुषों की मर्यादा का छेदन न करे, वही पण्डित वा अध्यापक आदि संज्ञा को प्राप्त होवे। प्रकरण की समाप्ति पर महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि जहां ऐसे-ऐसे स्त्री पुरुष पढ़ाने वाले होते हैं वहां विद्या धर्म और उत्तमाचार (सत्य भाषण एवं मिथ्याचार-भ्रष्टाचार रहित व्यवहार आदि) की वृद्धि होकर प्रतिदिन आनन्द ही बढ़ता रहता है। हमारे शिक्षक और बुद्धिमान लोग स्वयं जान सकते हैं कि शिक्षक व अध्यापक-अध्यापिकाओं के इन गुणों में से कितने गुण आजकल के शिक्षकों में पाये जाते हैं? क्या शिक्षकों के महर्षि दयानन्द वर्णित यह गुण आज अप्रासंगिक हो गये हैं? ऐसा नहीं है। इसका प्रथम कारण तो हमारे शिक्षाविदों की इनसे अनभिज्ञता व दूसरा पाश्चात्य मूल्यों के प्रति गहन प्रेम है और इसके अतिरिक्त शिक्षण व्यवसाय से जो सुख सुविधायें उन्हें मिल रही है, उनका राग भी एक प्रमुख कारण है। हम महर्षि दयानन्द के प्रति इन वैदिक, सनातन व भारतीय मूल्यों को महाभारत से निकाल कर हिन्दी में अर्थ सहित जनसाधारण में प्रस्तुत करने के लिए सभी देशवासियों पर उनका उपकार मानते हैं। महर्षि द्वारा प्रस्तुत विचारों पर ध्यान देने पर हमें उनके गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती और स्वयं स्वामी दयानन्द ही सच्चे अध्यापक, शिक्षक, गुरु व आचार्य और इन सभी गुणों से सम्पन्न दिखाई देते हैं।

अध्यापकों के गुणों का वर्णन करने के बाद वह पढ़ाने में अयोग्य मूर्ख शिक्षकों का वर्णन भी करते हैं जिसका आधार भी उन्होंने महाभारत के उद्योगपर्व के अध्याय 33 के दो श्लोकों संख्या 30 व 36 को बनाया है। वह लिखते हैं कि जिसने कोई शास्त्र न पढ़ा न सुना, अतीव घमण्डी, दरिद्र होकर बड़े-बड़े मनोरथ करनेहारा, बिना कर्म से पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा करने वाला हो, उसी को बुद्धिमान लोग मूढ़ कहते है। ऐसे लोग पढ़ाने योग्य नहीं होते। आजकल समाज में ऐसे बहुत से अध्यापक हमें देखने को मिल जाते हैं। दूसरे श्लोक का अर्थ करते हुए वह लिखते हैं कि जो बिना बुलाये सभा वा किसी के घर में प्रविष्ट हो, उच्च आसन पर बैठना चाहे, बिना पूछे सभा में बहुत सा बोले, विश्वास के अयोग्य वस्तु वा मनुश्य में विश्वास करे, वही मूढ़ और सब मुनष्यों में नीच मनुष्य कहाता है। इन 2 श्लोकों के अर्थों पर टिप्पणी कर दयानन्द जी कहते हैं कि जहां ऐसे पुरुष अध्यापक, उपदेशक, गुरु और माननीय होते हैं वहां अविद्या, अधर्म, असभ्यता, कलह, विरोध और फूट बढ़कर दुःख ही बढ़ता जाता है। शिक्षक दिवस अभी 3 दिन पूर्व ही व्यतीत हुआ है। हम समझते हैं कि प्रत्येक शिक्षक दिवस पर शिक्षक के इन गुणों व अवगुणों पर विचार कर अवगुणों के त्याग व गुणों के ग्रहण की सभी शिक्षकों को प्रतिज्ञा लेनी चाहिये।

विद्यार्थियों के लक्षण भी महर्षि दयानन्द ने महाभारत के आधार पर लिखे हैं। वह हैं कि शरीर और बुद्धि में जड़ता, नशा, मोह, किसी वस्तु में फंसावट, चपलता और इधर-उधर की व्यर्थ कथा करना सुनना, पढ़ते पढ़ाते रुक जाना, अभिमानी, अत्यागी होना ये सात दोष विद्यार्थियों में होते हैं। जो ऐसे दोषों से युक्त विद्यार्थी होते हैं, उनको विद्या कभी नहीं आती। सुख भोगने की इच्छा करने वाले को विद्या कहां? और विद्या पढ़ने वाले को सुख कहां? क्योंकि विषय-सुखार्थी विद्या को और विद्यार्थी विषयसुख को छोड़ दें। ऐसा किये विना विद्या कभी नहीं आ सकती। कैसे विद्यार्थियों को विद्या आती है, इसका उत्तर है कि जो सदा सत्याचार में

क्रमशः पृष्ठ 6 पर...

वेदों की ओर लौटो

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के 'वेदों की ओर लोटो' अभियान को जन-जन की आवाज बनाकर गांव-गांव निकले आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र जी ने 20.08.2015 से 28.08.2015 तक भिवानी जिले में गांव-गांव प्रचार कार्यक्रम चलाया जिसका अत्यन्त सकारात्मक प्रभाव पड़ा। आचार्य जी ने आर्य सिद्धान्तों को प्रभावी ढंग से जनता के सामने रखा जिसे जनता ने हाथों हाथ लिया। उन्होंने माना कि हम आर्य हैं, आर्यावर्त के वासी हैं तथा आर्यों की सन्तानें हैं। अत: किसी भी पाखण्ड से बचे रहेंगे तथा समाज में फैली सामाजिक बुराइयों जैसे-किसी भी प्रकार के नशे आदि से दूर रहेंगे तथा अन्यों को भी बचायेंगे। आचार्य जी ने स्कूलों में अनेक कार्यक्रम किये जिनमें योग, बुद्धि बढ़ाने के साधन ब्रह्मचर्य एवं पाखण्ड से बचने व आर्य सिद्धान्तों पर चलकर जीवन को सफल बनाने के उपायों पर प्रकाश डाला। विद्यालयों ने आचार्य जी के प्रवचनों का लाभ उठाया और आग्रह किया वे फिर कब हमारे विद्यालय आयेंगे।

आओ हम सब मिलकर अन्धविश्वास से समाज को ज्ञान के प्रकाश की ओर लेकर चलें। जन-जन से हमारी अपील है कि 'वेदों की ओर लौटो' इस अभियान से आप जुड़िये। जुड़ने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्पर्क करें।

वेदों की ओर लौटो' में प्रस्तुत कार्यक्रम की झलकियां

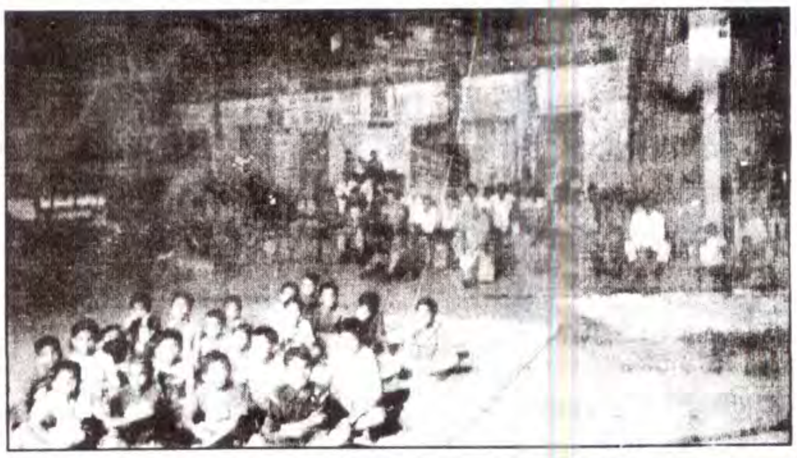

धार्मिक सहिष्णुता

❑ अभय आर्य, निदेशक, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। अत: जैसे संस्कार हम बच्चों को देते हैं, उसी के अनुरूप देश का भविष्य बनता है। आज देश में धार्मिक असहिष्णुता के कारण जो अराजकता, अलगाववाद, पारस्परिक संदेह व विनाशकारी संघर्ष का वातावरण फैल रहा है, उससे स्पष्ट है कि हम बालकों को धर्म की ठीक-ठीक शिक्षा देने में असफल हुए हैं। अत: बालकों को धर्म की वैज्ञानिक, व्यावहारिक, वास्तविक शिक्षा देना नितान्त आवश्यक है, जिससे कि देश में सुख-शान्ति, प्रेम का वातावरण बन सके। इसी संदर्भ में हम यहां धर्म को जानने का प्रयास करते हैं।

आचार्य अभय आर्य

'धर्म' शब्द संस्कृत की 'धृ-धारणे' धातु से बना है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिसे हम धारण करते हैं और जो हमें धारण करता है, उसे 'धर्म' कहते हैं। सरल अर्थों में कहें तो अच्छा खान-पान और सदाचार सम्बन्धी बातें धारणीय होने के कारण तथा धारण करने पर हमारी उन्नति करने के कारण 'धर्म' के अन्तर्गत आती हैं। शास्त्रों में धैर्य, क्षमा, मन पर नियन्त्रण अर्थात् मन को अच्छाई में लगाना तथा बुराई से हटाना, चोरी न करना, तन-मन-बुद्धि व आत्मा की शुद्धि, इन्द्रियों को बुरे विषयों से हटाना, सोच-समझकर कार्य करना, विद्या को बढ़ाना तथा क्रोध न करना, ये सब धर्म के लक्षण कहे गये हैं। धर्म के इन लक्षणों पर सभी मत-पन्थ, वर्ग, समुदाय एकमत मिलेंगे। इसके विपरीत जो बातें परस्पर विरोध सिखाती हैं, उन्हें धर्म के अन्तर्गत कभी नहीं रखा जा सकता।

हम सभी एक आत्मतत्त्व की डोर से बंधे हैं। जैसी आत्मा मेरे शरीर में निवास करती है, ऐसे ही अन्य मनुष्यों के शरीर में भी। मैं नहीं चाहता कि दूसरे मुझसे ऐसा व्यवहार करें जिससे मुझे दु:ख हो, ठीक इसी प्रकार मुझे भी दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। यही धर्म का मर्म है। हम धर्म की इसी प्रकार की वैज्ञानिक, व्यावहारिक व्याख्याओं से ही धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण बना सकते हैं। 'धर्म' की इस प्रकार की व्याख्या से विद्यार्थी परोपकारी सिद्धान्तों पर एकमत होकर स्वयं का, समाज व देश का कल्याण कर सकते हैं। बालकों को विद्यार्थी काल से ही सिखाया जाए कि कर्त्तव्य का पालन ही 'धर्म' है। माता-पिता, समाज, देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का ठीक-ठीक पालन करने वाला व्यक्ति ही धार्मिक होता है। पूरे मनोयोग से पढ़ाने वाला अध्यापक तथा इसी ढंग से पढ़ने वाला विद्यार्थी धार्मिक होते हैं। रिश्वत न लेने वाले कर्मचारी, अधिकारी तथा जो भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं होते ऐसे नेता धार्मिक होते हैं। जिस देश के अन्न, जल, वायु आदि के सेवन से हमारा यह शरीर पला बढ़ा है, उस देश की उन्नति करना तथा उसकी एकता व अखण्डता को बनाए रखना हम सबका साझा कर्त्तव्य है। इस प्रकार की धार्मिक शिक्षा से विद्यार्थियों में ऐसे संस्कार डाले जा सकते हैं कि वे भविष्य में धार्मिक सहिष्णुता अपनाकर देश को अलगाववाद, जातिवाद, वर्गगत संघर्ष से बचाकर उसे उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं।

अध्यापक विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए मन में भी कभी यह बात न आने दें कि मुझे इन्हें हिन्दू, मुस्लिम, सिख या इसाई बनाना है। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि बालकों में अच्छे संस्कार डालकर, उन्हें अनुशासन का महत्त्व समझाकर सभ्य नागरिक बनाएं। सही रूप में मनुष्य वह होता है जो सोच-समझकर, सही-गलत का अनुमान लगाकर कार्य करता है। अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरे की उन्नति के लिए भी तन-मन-धन से प्रयत्न करने वाला व्यक्ति ही सही रूप में मनुष्य कहलाने योग्य है। हमें आरम्भ से ही बालकों में अच्छाई को अपनाने तथा बुराई का प्रतिकार करने के संस्कार डालने चाहिएं। विद्यार्थियों को यह भलीभांति समझा देना चाहिए कि बुराई को अपनाने वाला व्यक्ति चाहे जिस किसी भी मतपंथ में क्यों न हो, वह सदैव दु:खी रहता है तथा अच्छाई अपनाने वाला व्यक्ति हर जगह सुखी रहता है। इस प्रकार के संस्कार अपनाकर बालक-मत-पंथ के आग्रह से दूर रहकर धार्मिक सहिष्णुता अपना सकते हैं।

राजनेताओं का भी कर्त्तव्य बनता है कि बालकों को जाति व मत-पंथ के विद्वेष से मुक्त वातावरण प्रदान करें। जाति के नाम पर राजनीतिक, सामाजिक संगठनों का निर्माण वर्चस्व की लड़ाई का रूप लेकर धार्मिक असहिष्णुता का कारण बनता है। अत: व्यक्तिगत व समूहगत हित से भी ऊपर राष्ट्रहित को रखने के संस्कार डालें।

नोट-दैनिक जागरण 'संस्कारशाला' द्वारा उपरोक्त विषय पर मांग करने पर मैंने यह लेख लिखकर दिया।

देश के कर्णधार हमारे शिक्षक व.... पृष्ठ 4 का शेष....

प्रवृत्त, जितेन्द्रिय और जिन का ब्रह्मचर्य सच्चा व अखण्डित हो, वे ही विद्वान होते हैं। इसलिये शुभ लक्षणयुक्त अध्यापक और विद्यार्थियों को होना चाहिये। महर्षि दयानन्द अपने विचार व मान्यतायें बताते हुए लिखते हैं कि अध्यापक लोग ऐसा यत्न किया करें कि जिससे विद्यार्थी लोग सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी सभ्यता, जितेन्द्रिय, सुशीलतादि शुभगुणयुक्त शरीर और आत्मा का पूर्ण बल बढ़ा के समग्र वेदादि शास्त्रों में विद्वान् हों। सदा उन की कुचेष्टा छुड़ाने में और विद्या पढ़ाने में चेष्टा किया करें और विद्यार्थी लोग सदा जितेन्द्रिय, शान्त, पढ़ानेहारों में प्रेम, विचारशील, परिश्रमी होकर ऐसा पुरुषार्थ करें जिससे पूर्ण विद्या, पूर्ण आयु, परिपूर्ण धर्म और पुरुषार्थ करना आ जाय। यह कार्य व इनको करके अध्यापक ब्राह्मण वर्ण के कहलाते है।

हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों व मान्यताओं में आदर्श गुरु व शिष्य का चित्र उपस्थित हुआ है। हमारे शिक्षाविदों को इस पर विचार कर इसका शिक्षा प्रणाली में समावेश करना चाहिये। कम आयु के बच्चों में सदाचार व सदग्रन्थों वेद, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति एवं सत्यार्थप्रकाश आदि की शिक्षा आवश्यक है। इनको पूर्ण वा आंशिक ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिये तभी हमें अच्छे शिक्षक व शिष्य प्राप्त होंगे। समूचे देश में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप से पढ़ाई जाये, इससे शिक्षा की बहुत सेवा होगी। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	16 से 20 सितम्बर 2015
2. आर्यसमाज भाकली जिला रेवाड़ी	19 से 20 सितम्बर 2015
3. आर्यसमाज धनौंदा ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़)	27 से 29 अक्तू० 2015
4. आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नवम्बर 2015

—सभामन्त्री

हिमाचल राजभवन में मांसाहार बंद

दोनों समय होता है यज्ञ, परिसर में गाय का जोड़ा करता है विचरण

डॉ. रचना गुप्ता. शिमला

कभी बिजली से चकाचौंध रहने वाले हिमाचल राजभवन की फिजा बदल गई है। अब यहां न मांसाहार आता है न ही बनता है। शंख व घंटी की मधुर ध्वनि, संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण और सुबह-शाम हवन यज्ञ की विशुद्ध महकती खुशबू यहां भारतीय संस्कृति व मूल्यों की अनुभूति करवा रही है।

महज एक माह में ही हिमाचल प्रदेश के नए राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने सात्विक माहौल को राजभवन से जन्म देकर प्रदेशभर के लिए एक साफ संदेश दे दिया है। राजभवन के आंगन में अब गाय का जोड़ा विचरण करता है और उन्हें पहला गोग्रास राज्यपाल स्वयं खिलाते हैं। भवन का यह माहौल आज के दौर में अकल्पनीय लगता है लेकिन यह वास्तविकता है कि राज्यपाल के यहां प्रवेश करते ही वे सभी परंपरागत वस्तुएं हटा दी गईं जो सात्विकता के माहौल को दूषित करती हों। संस्कृत में शपथ लेने वाले राज्यपाल आचार्य देवव्रत कहते हैं, 'संस्कृत में ही संस्कृति छिपी है, मैंने तभी इसमें शपथ ली।'

◆ खुली गोशाला, राज्यपाल आचार्य देवव्रत खिलाते हैं पहला गोग्रास

हरियाणा के कुरुक्षेत्र गुरुकुल स्कूल को सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने के जिस उद्देश्य से उन्होंने बूंद-बूंद से घड़ा भरा, उसका परिणाम ही है कि वह हिमाचल जैसे शांत राज्य के राज्यपाल बने।

दरअसल आचार्य देवव्रत की शख्सियत इस मायने में बयां करने वाली है कि न तो वह नेता है न ही कोई उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि है। उनके राजभवन पहुंचते ही कोई भी बिजली का बल्ब बिना वजह नहीं जलता। यह स्टाफ को तब समझ में आया जब उन्होंने खुद कमरा छोड़ने से पहले सभी बत्तियां बुझानी शुरू की। वह अपने कमरे में सिर्फ एक बल्ब जलाते हैं। आचार्य का कहना है कि जो बिजली बचे वह किसान को खेती की पैदावार में मदद करे। वह कहते हैं- 'मैं राज्यपाल पद का सुख भोगने नहीं आया हूं। हर वर्ग को सुख पहुंचा सकूं, यही मेरा ध्येय है।'

समय की मांग है आर्य नेताओ! ऋषि ऋण चुकाने के लिए एक हो जाओ

19वीं सदी में युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। महर्षि ने उस समय भी धार्मिक व सामाजिक संगठनों को सूत्र में इकट्ठे होने के लिए भरसक प्रयत्न किया लेकिन बात नहीं बनी। अब तो मैं आर्यों को ही इकट्ठे होने के लिए नम्र अनुरोध कर रहा हूँ।

महर्षि दयानन्द ने वेद का ज्ञान देकर समाज को बहुत कुछ दिया है। स्वामी दयानन्द जी ने 18 घण्टे की समाधि छोड़ी, 17 बार जहर पीया, देश की गरीबी व गुलामी पर रोये, 7 अप्रैल 1875 ई० में मुम्बई में काकड़वाड़ी में आर्यसमाज की स्थापना की, 1878 ई० में हरियाणा प्रान्त के रेवाड़ी में गोशाला की स्थापना की, सबसे पहले देश की आजादी की आवाज उठाई। 10 सार्वभौमिक आर्यसमाज के नियम बनाए। लगभग 40 पुस्तकें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु आदि लिखी, जनता की भलाई के लिए व चरित्र निर्माण के लिए दो विधि और एक निधि पर चलने का सुझाव दिया। नारी अत्याचार व अन्धविश्वास आदि को खत्म करने के लिए रचनात्मक कार्य किये। कांग्रेस के इतिहासकार पट्टाभि सीतारमैया ने सर्वे करके बताया कि देश की आजादी के आन्दोलन में जेल जाने वाले तथा फांसी पर चढ़ने वाले 85 प्रतिशत आर्यसमाजी थे। कुर्बानी करने वाले सभी बहादुर महर्षि से प्रेरित थे। अत: ऋषि का बहुत बड़ा ऋण हम आर्यों पर है।

अब समय की मांग है कि आर्य विद्वानों को संगठित होकर एक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हो, एक प्रान्तीय सभा हो, गांव-गांव में एक आर्यसमाज हो, सभी चुनाव सर्वसम्मति से हो। सार्वदेशिक सभा विधिवत् तीन सभा विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा, राजार्य सभा का गठन करें। विधिवत् आश्रम व वर्णव्यवस्था को लागू किया जाए। आर्य भाइयों व आर्यनेताओं से मेरा एक बार पुन: अनुरोध है कि आपस के छोटे-मोटे मतभेद भुलाकर, अपना अहंकार व स्वार्थ छोड़कर आर्य विद्वानों व संन्यासियों को एक होकर समाजहित में ठोस कार्यवाही करनी चाहिए। वर्तमान में अनेक समस्या मुंह बाये खड़ी हैं। जैसे-शराबखोरी, गोहत्या, अन्धविश्वास, धार्मिक पाखण्ड, कन्या भ्रूणहत्या, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि संगठित होकर उपरोक्त बुराइयों के विरोध में आन्दोलन चलाना चाहिए। वरना आगे आने वाली पीढ़ियां धिक्कारेगी कि हमारे नेता इतने कायर व कमजोर व स्वार्थी थे कि अपने स्वार्थ व चौधर के लिए आपस में लड़ते रहे। वेदप्रचार के लिए कुछ नहीं किया।

आर्यो! कृष्णजन्माष्टमी पर योगिराज श्रीकृष्ण जी के जीवन से प्रेरणा लें

आज से 5000 वर्ष पहले श्रीकृष्ण महाराज का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण जी जन्म से ही क्रान्तिकारी थे, क्योंकि उनका जन्म ही जेल में हुआ था। भागवत वालों ने श्रीकृष्ण जी पर अनेक दोष लगाए। कृष्ण जी के सोलह हजार एक सौ आठ रानी थी। जबकि श्रीकृष्ण ने एक लड़की रुक्मिणी से शादी की थी। 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर एक पुत्र पैदा किया जिसका नाम प्रद्युम्न था। श्रीकृष्ण जी महाराज आदर्श गृहस्थी, चरित्रवान्, न्यायकारी तथा अन्याय के खिलाफ लड़ने वाला राजा था।

महर्षि दयानन्द के कथनानुसार देखो श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा (सत्यार्थप्रकाश)। मेरा आर्य नेताओं व विद्वानों से नम्र निवेदन है कि जन्माष्टमी पर्व पर योगिराज श्रीकृष्ण जी के जीवन व कार्यों से प्रेरणा लेकर तथा संगठित होकर वेदप्रचार को गति देकर समाज से अन्धविश्वास को मिटाओ।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, संरक्षक वेदप्रचार मण्डल (हिसार)

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल पलवल का तीन दिवसीय वेदप्रचार कार्यक्रम श्रावणी पर्व पर सम्पन्न हुआ जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० योगेशदत्त आर्य बिजनौर ने गीतों के माध्यम से बताया कि मनुष्य को मननशील बनकर सत्संग से लाभ प्राप्त करना चाहिए। सत्संग हमें सुख प्रदान करता है। सत्संग से सब मनुष्यों के मन में पैदा होने वाली भावना जीव को सत्य, धर्म, ज्ञान, वैराग्य, परोपकार तथा ईश्वर की ओर ले जाती है, वे सुखदायक है। अविकार (मिथ्याज्ञान), अस्मिता (जीव और बुद्धि एक समझना), राग (इच्छा, तृष्णा, लोभ), द्वेष (वैरभाव, क्रोध), अभिनिवेश (मृत्यु का भय) सत्संग सुनने तथा आचरण करने से पांच क्लेश दूर हो जाते हैं।

अत: असत्य, अधर्म, अज्ञान, स्वार्थ, विषयभोग आदि भावना से बचना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम मनुर्भव (मनुष्य बनने) मननशील होने पर बल दिया। भारत के उच्चकोटि के भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क ने गीतों के माध्यम से अंधविश्वास, पाखण्ड, अविद्या तथा समाज की दशा पर प्रकाश डाला। लोगों पर विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क तथा श्री कर्मठ जी के गीत सुनाकर मधुर आवाज से लोगों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर श्री दीपक मंगला राजनैतिक सचिव मुख्यमंत्री का अभिनन्दन पगड़ी बांधकर श्री गंगाचरण पातापंच, श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर, श्री श्यामसिंह आर्य प्रधान ने किया। श्री मंगला ने सर छोटूराम पार्क स्थित आर्यसमाज मन्दिर का सौन्दर्यकरण करने की घोषणा की। ग्राम तथा बाहर के सज्जनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर ने किया।

सर्वश्री भजनलाल आर्य, करनसिंह आर्य, रूपचन्द आर्य, ठाकुरलाल आर्य, प्रहलाद सिंह आर्य, गिर्राज सिंह पंच, राजकुमार आर्य, दयाराम आर्य, नरेश, चरणसिंह, आशाराम, बिसराम, जगवीर, राधेलाल आर्य, ज्ञानचन्द शर्मा, वीरसिंह आर्य, नारायण सिंह, रीछपाल फौजी, पं० तुलाराम आर्य, पं० अशोक कुमार आर्य, धर्मवीर आर्य, मा० शिवसिंह आर्य, भरतसिंह आर्य, राजू, स्वामी आशानन्द, शिवचरण आर्य, भूपेन्द्र, दीपचन्द, लेखराम, प्रतापसिंह, वीरेन्द्र सिंह आर्य ने प्रतिदिन भाग लिया।

—वीरेन्द सिंह आर्य, मंत्री, आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल पलवल

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में संस्कृत दिवस मनाया गया

हिसार। दिनांक 31.08.2015 को संस्कृत भारती हिसार एवं दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के संयुक्त तत्त्वावधान में संस्कृत दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने की।

डॉ० सत्यकाम आचार्य मुख्य अतिथि व आचार्य दलीप सिंह खरब थे। संस्कृत दिवस के साथ-साथ '**बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ**' विषय पर सारगर्भित विचार रखे गये।

निम्न विद्वानों ने संस्कृत भाषा पर विचार रखे। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने सबका स्वागत किया। पुष्पमाला से विद्वानों का सम्मान किया गया। बिजेन्द्र शास्त्री कुगड़, ब्र० सुतार आर्य ने स्वागत गीत गाया। देवदत्त शास्त्री, अमृतलाल शास्त्री, मुरलीधर पाण्डेय हांसी, सन्तोष शास्त्री, सूरजभान शास्त्री, जगतपाल शास्त्री मताना, मुकेश कुमार शास्त्री हिसार, कुलभूषण शास्त्री हांसी, सतपाल शर्मा कार्यकारी एक्सीयन हिसार आदि वक्ताओं ने संस्कृत भाषा को सब भाषाओं की जननी बताया। अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ाओ। कई वक्ताओं ने समस्या व सुझाव रखे। कार्यक्रम सायं पांच से आठ बजे तक चला। शान्तिपाठ के बाद जलपान किया गया।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज के विद्वान् महाशय मामचन्द आर्य की प्रथम पुण्यतिथि दिनांक 7 सितम्बर 2015 को उनके निवास स्थान रोहतक में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर यज्ञ का संचालन श्री जितेन्द्र जी ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा म० पूर्णसिंह आर्य थे। यजमान श्री नरेश सैनी बने। इस अवसर पर महाशय जी का सारा परिवार व अन्य आर्य परिवारों से पुरुष व महिलाएं सम्मिलित हुईं। ब्र० सत्यकाम जी ने महाशय मामचन्द जी के विषय में अपने विचार प्रकट किये तथा उन्होंने कहा कि उनके गुणों का अनुसरण करना चाहिए। आचार्य अभय आर्य ने बताया कि ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम में रहते हुए अपने परिवार में धर्मत्व के भाव पैदा किए। उन्होंने अपने संयुक्त परिवार की परम्परा को पूर्वजों की भांति आगे बढ़ाया। डॉ० जितेन्द्र आर्य ने भी महाशय जी की त्याग, स्वाध्याय और सादगी पर प्रवचन किया। उन्होंने बताया कि उनके गुणों को धारण करना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि देना है।

अन्त में परिवार के सभी सदस्यों ने आए हुए आगन्तुकों का हाथ जोड़कर धन्यवाद किया।

-भलेराम आर्य, ग्राम सांघी (रोहतक)

स्व० चौ० विजयकुमार को याद किया गया

हिसार। आर्यसमाज नलवा जिला हिसार की ओर से 27.08.2015 को स्व० चौ० विजयकुमार आर्य पूर्व उपायुक्त की पुण्यतिथि पर यज्ञ किया गया तथा उनको याद किया गया। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने उनके जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वह ईमानदार, सत्यवादी, परिश्रमी, मिलनसार, स्वाभिमानी, दृढ़ आर्य थे। उपायुक्त पद से त्यागपत्र देकर ढाई वर्ष तक शराबबन्दी आन्दोलन में कैंसर के भयंकर रोग के बाद भी शराबबन्दी आन्दोलन में सराहनीय कार्य किया। 27 अगस्त 1995 को उनका देहान्त हो गया।

अन्य श्रद्धांजलि देने वालों में श्री भलेराम आर्य, युद्धवीर आर्य, पवन कुमार आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती बिमला आर्या, उर्मिल आर्या, संजय आर्य आदि थे।

श्रावणी एवं रक्षाबंधन पर्व पर यज्ञ का आयोजन

हिसार। दिनांक 29.08.2015 को आर्य निवास नलवा (हिसार) में राजवीर आर्य के निवास पर श्रावणी एवं रक्षाबंधन पर्व पर यज्ञ का आयोजन किया गया। वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। डॉ० कुलदीप सिंह आर्य रासीवास दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

स्नेही जी ने पर्वों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत बदले जाते हैं, वेदमन्त्रों का पाठ किया जाता है। रक्षाबन्धन पर्व पर बहिनें अपने भाइयों के हाथ की पहुँची (राखी) बान्धती हैं तथा भाई उनको रक्षा का आश्वासन देते हैं। कुछ पैसों का सहयोग करते हैं। इन पर्वों पर यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर राजवीर आर्य, युद्धवीर आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती सरोज आर्या, कुमारी उर्मिल आर्या आदि उपस्थित थीं।

—नरेन्द्र आर्य, मंत्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक ने घरेलू कारणों से सभा की सेवा से त्याग-पत्र दे दिया है। अब वे स्वतंत्र रूप से भजनोपदेशक का कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज के अधिकारियों व अन्य सभी को सूचित किया जाता है कि सभा के नाम से श्री जसविन्द्र आर्य से कोई धनराशि का लेन-देन न करें सभा इसकी जिम्मेवार नहीं होगी।

—सभामन्त्री

रक्षाबंधन व श्रावणी पर्व सम्पन्न

हिसार। स्त्री आर्यसमाज मोहल्ला डोगरान हिसार की ओर से 25.08.2015 से 30.08.2015 तक रक्षाबंधन एवं श्रावणी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने वेदकथा की। वैदिक विद्वान् डॉ० प्रमोद योगार्थी यज्ञ के ब्रह्मा थे, ब्र० अमित आर्य व ब्र० नरोत्तम आर्य ने वेदपाठ किया। श्रीमती सन्तोष बाला आर्या (गत्रौर), पं० सूर्यदेव वेदांशु व बहिन कल्याणी आर्या के प्रेरणादायक भजन हुए। डॉ० प्रमोद योगार्थी ने मंच का कुशल संचालन किया।

आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री कुलपति गुरुकुल आर्यनगर को पुष्पमाला व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ० कमल गुप्ता, मुख्य संसदीय सचिव हरयाणा सरकार। विशिष्ट श्री अजय बत्रा आदि ने अपने विचार रखे। आर्यसमाज की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इन्हें भी पुष्पमाला व शॉल देकर सम्मानित किया गया। मंच पर स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी माधवानन्द, महात्मा अत्तर सिंह स्नेही, सत्यपाल आर्य, पं० लालदेव शास्त्री, चौ० हरिसिंह सैनी, रामकुमार आर्य मण्डल प्रधान, युद्धवीर सिंह आर्य, आचार्य दयानन्द शास्त्री, सेठ जगदीश प्रसाद आर्य, कैलाशचन्द्र शास्त्री, मानसिंह पाठक, निहाल सिंह आर्य, प्रमोद लाम्बा, अजय एलावादी, अवनीश आर्य आदि थे। प्रधाना श्रीमती शन्नोदेवी ठकराल, मन्त्राणी राकेश काठपाल, कोषाध्यक्ष सुरेश सरदाना आदि बहनें भी काफी संख्या में उपस्थित थीं।

-सत्यप्रकाश मित्तल, हिसार

हिसार के सांसद श्री दुष्यन्त चौटाला ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का दौरा किया

हिसार। दिनांक 31.08.2015 को सांसद दुष्यन्त चौटाला ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का दौरा किया। इस अवसर पर डॉ० रमेश लिखा, प्रमोद लाम्बा, राजकुमार आर्य, युद्धवीर सिंह आर्य, अश्वन बत्रा, वरिष्ठ पत्रकार देवेन्द्र उप्पल, महात्मा वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही संरक्षक वेदप्रचार मण्डल, प्रधान रामकुमार आर्य, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, निहाल सिंह आर्य, दलीप आर्य, किशनलाल आर्य, कैलाश शास्त्री, एस.आर. चुग, सतीश बैनीवाल आदि अनेक लोग उपस्थित थे। आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने स्वागत किया तथा विद्यालय का परिचय दिया। सांसद 02.08.2015 को किसी कारण से न आ सके। सांसद को शॉल व सत्यार्थप्रकाश भेंट कर सम्मानित किया गया। छात्रावास के लिए एक कमरा बनवाने का आश्वासन दिया।

-ईश्वर सिंह आर्य, हिसार

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समरोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 6, 7, 8 मार्च 2016 (रविवार, सोमवार, मंगलवार) को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा। इस शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए 20 सितम्बर 2015 (रविवार) प्रातः 10.30 बजे गुरुकुल झज्जर परिसर में एक बैठक का आयोजन किया जा रहा है। आप सभी आर्य सज्जनों व सदस्यगणों से नम्र निवेदन है कि इस बैठक में उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य सुझाव व सहयोग देने की कृपा करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।